दैनिक ट्रिब्यून
लहरें
रविवार, 1 नवंबर, 2015

विश्वयुद्ध की याद दिलाता पर्ल हार्बर...
होनोलुलु में ही पर्ल हार्बर है, जिस पर 7 दिसंबर, 1941 को जापान ने हमला किया था। पेज -2

जब बच्चा न माने आपकी बात...
कई बार देखने में आता है कि बच्चे अपने माता-पिता की बात नहीं सुनते हैं। पेज -3

हरियाणा अपने 50वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। पहली नवंबर, 1966 को अस्तित्व में आये इस सूबे की अपनी अलग पहचान है। 'जय जवान-जय किसान' का नारा यहां जीवंत होता नजर आता है। यहां के किसान जहां अन्न भंडारण में अव्वल हैं वहीं सीमाओं की सुरक्षा में तैनात सैनिकों में हर दसवां सैनिक हरियाणवी है। बॉलीवुड पर भी हरियाणवी रंग चढ़ने लगा है। संयोग से हरियाणा गठन के सात महीने बाद जन्मे रणदीप सिंह सुरजेवाला ने भी 49 वर्षों के इस सफर में हरियाणा में आये उतार-चढ़ाव देखे हैं। वे हरियाणा की राजनीति का ही एक खास चेहरा हैं। बदलते हरियाणा की कहानी अपने ही शब्दों में बता रहे हैं ***रणदीप सिंह सुरजेवाला।***

कितना बदल गया हरियाणा

किसान और जवान, हुक्के और चौपाल, पगड़ी और धोती, घाघरे और कुर्ती, पहलवान और दंगल, पनघट और पहेलियां, सांग और रागनी तथा कड़ी मेहनत और खड़ी बोली दशकों से हरियाणा के सामाजिक परिदृश्य की विशेष पहचान हैं। देश को अन्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाने की चुनौती हो या देश की सीमा पर कुर्बानी देने की, हरियाणा के किसान और फौजी जवान के बुलंद हौसलों ने सदैव भारत का मस्तक ऊंचा किया है। यही कारण है कि कारगिल की लड़ाई हो या हाल में ही ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर) उग्रवादी हमले में सीने पर गोली खाने वाला जवान 'रॉकी', शहादत के इतिहास से हरियाणवियों ने देश को सदैव गौरवान्वित किया है। हरियाणा के पहलवान हों या या वेटलिफ्टर, बॉक्सर हों या शूटर, हॉकी प्लेयर हों या एडवेंचर स्पोर्ट्स के खिलाड़ी- एक छोटे से प्रदेश ने सभी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में हमेशा भारत के लिए 50 प्रतिशत से अधिक मेडल जीत तिरंगे का मान बढ़ाया है और हरयाणवी नृत्य हो या पंजाबी गिद्दा, तीज का त्योहार को या होली का; हरियाणवी रंगों और गीतों की तो बात ही अलग है। यहां तक कि हरियाणा की बोली अब बॉलीवुड फिल्मों को भी रास आने लगी है।

हरियाणा की खूबियों का इतिहास और संस्कृति की विरासत बेजोड़ हैं- चाहे वो श्रीमद्भगवत गीता की पवित्र वाणी हो या सिंधुघाटी की सभ्यता, महाभारत का युद्ध हो या पानीपत की लड़ाई, 1857 की क्रांति हो या जंग-ए-आजादी का संघर्ष। सदियों से भारतीय इतिहास और सभ्यता पर हरियाणा की माटी की विशेष छाप रही है। इसीलिए हरियाणा को केवल एक भौगोलिक भूभाग नहीं, बल्कि एक विशेष सामाजिक और सांस्कृतिक इकाई के रूप में देखा जाना चाहिए। तभी हम एक अलग राज्य के रूप में 50 वर्षों की हरियाणा की यात्रा का सही मूल्यांकन कर पाएंगे।

यह संयोग ही है कि जब हरियाणा राज्य का गठन 1 नवंबर, 1966 को हुआ, तो लगभग 7 महीने बाद मेरा जन्म भी इसी पावन धरती पर हुआ। ये वह वक्त था, जब देश की सत्ता की कमान इंदिरा गांधी के हाथों में थी। बचपन से आज तक बदलते, बढ़ते और चढ़ते हरियाणा का मैं स्वयं साक्षी भी हूं और विकास यात्रा में एक छोटा सा भागीदार भी। अलग राज्य बनने के समय सात जिलों और 76 लाख की आबादी वाला हरियाणा बेहद पिछड़ा क्षेत्र था। 1970 के दशक में इस पिछड़े राज्य को आधुनिकतम राज्य बनाने की सोच और सरकार तथा लोगों की कड़ी मेहनत ने सिर्फ 10 वर्ष में पूरे राज्य को सड़कों, बिजली, परिवहन और अन्य ढांचागत सुविधाओं से जोड़ दिखाया। 14 दिसंबर, 1983 को गुड़गांव में 'मारुति उद्योग' की शुरुआत ने हरियाणा को देश का ऑटो-मोबाइल हब व औद्योगिक विकास का सबसे बड़ा केंद्रबिंदु बना डाला। मेरा मानना है कि मारुति दौर की शुरूआत ने हरियाणवी अर्थव्यवस्था को जहां एक नई शुरूआत दी वहीं हमारे लाइफ स्टाइल ने भी यहां से नया मोड़ लिया।

बेशक, मैं उस समय लगभग 19 वर्ष का ही रहा होगा लेकिन मेरे जहन में आज भी वह पल याद है, जब दिल्ली के चारों ओर 'राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र' का गठन हुआ। केंद्र सरकार ने 'राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र योजना बोर्ड कानून, 1985' को बनाया तो यह हरियाणा के लिए सबसे स्वर्णिम वरदान साबित हुआ। एनसीआर से ही औद्योगिक, आईटी व शहरी विकास में हरियाणा को देश में सबसे अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया। आज दो तिहाई हरियाणा यानि 21 में से 13 जिले देश के 'राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र' का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। करीब 50 वर्षों के इस पड़ाव में कई उतार-चढ़ाव इस सूबे ने देखे हैं। छोटे-बड़े आंदोलनों का सामना भी किया है, पर हरियाणा बढ़ता रहा। बढ़ते हरियाणा की सबसे बड़ी उपलब्धि और चुनौती 'बिजली व नहरी पानी' रहा है। प्राकृतिक स्रोतों जैसे कि जल संसाधनों/पनबिजली का अभाव तथा बंदरगाह/कोयले की खदानों से हजारों किलोमीटर की दूरी ने बिजली-पानी को हमेशा एक बड़ी चुनौती, सामाजिक बेचैनी, टकराव व राजनैतिक परिवर्तन का विषय बनाया है। 1980, 1990 व 2004 तक एसवाईएल का पानी, नहरी पानी का समान बंटवारा व बिजली की भयंकर कमी, अनेक सामाजिक विवाद तथा सरकारों के बदलाव का कारण बने। 21वीं सदी के पहले दशक में यमुनानगर (800 मैगावाट), खेदड़ (1200 मैगावाट), झाड़ली-। (1500 मैगावाट), झाड़ली-।। (1350 मैगावाट) में नए बिजलीघर लगा तथा 1800 मैगावाट प्रतिवर्ष बिजली की 25 वर्ष के लिए दूसरे प्रांतों से गारंटीशुदा खरीदकर बिजली की समस्या का स्थायी समाधान किया गया।

दूसरी ओर, एसवाईएल के विवाद के चलते, हांसी-बुटाना नहर का निर्माण कर दक्षिणी हरियाणा तक नहरी पानी के समान वितरण की कोशिशें भी हुईं। दुर्भाग्य से हांसी-बुटाना नहर भी, एसवाईएल की तरह, दलगत राजनीति की भेंट चढ़ गई। मगर मुझे आज भी विश्वास है कि इन दोनों विषयों (एसवाईएल तथा हांसी-बुटाना नहर) का निर्णय हरियाणा की जनता के हक में होना सुनिश्चित है। 21वीं सदी के पहले दशक में पूरे देश में हुए आर्थिक उदारीकरण तथा प्रगति का हरियाणा ने भरपूर फायदा उठाया। न केवल हरियाणा प्रांत का तरक्की पर खर्च किया जाने वाला 'प्लांड बजट' बढ़कर 27000 करोड़ रु. सालाना हो गया, बल्कि हरियाणा में स्थित 'राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र' का बड़ा हिस्सा कॉरपोरेट व औद्योगिक हब के तौर पर विकसित हो पाया। आज अकेले गुड़गांव में एक हजार से अधिक देसी व अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के कॉर्पोरेट ऑफिस, उद्योग तथा कॉल सेंटर हैं, जिनमें न केवल लाखों लोगों को रोजगार मिलता है, परंतु वो प्रांत की आय में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

आज अगर हरियाणा प्रति व्यक्ति आय, निवेश के केंद्र व जीडीपी से लेकर गेहूं तथा दूध की उत्पादकता में देश के सबसे अग्रणी प्रांतों की सूची में खड़ा है, तो इसका सारा श्रेय सरकारों तथा राजनीतिक दलों से बढ़कर हरियाणा के 2.53 करोड़ बेबाक, खुले दिल वाले और मेहनतकश लोगों को जाता है। हरियाणवियों की दरियादिली, खुला मन, बड़प्पन व एक दूसरे की मदद करने की आदत ही हरियाणा की सबसे बड़ी पूंजी भी है।

इन सबके बावजूद हरियाणा प्रदेश में भविष्य की अनेक गहन चुनौतियां हैं। जैसे कि योजनाबद्ध शहरी विकास, शिक्षा की गुणवत्ता में भारी कमी, कृषि उत्पादकता व आय में बढ़ोत्तरी न होना, खेती से जुड़े उद्योग जैसे कि कपड़ा व दरी उद्योग, चावल उद्योग, कपास जिनिंग उद्योग, आटा मिलों, लकड़ी उद्योग इत्यादि में वृद्धि की बजाए कमी। ऐसे ही कई सामाजिक विषय चिंताजनक हैं, जैसे कि जातीय टकराव, पारिवारिक इकाइयों का कमजोर होना, भाईचारे की भावना व परस्पर मदद का जज़्बा क्षीण पड़ना, शराब व अन्य नशों का प्रचलन, अपराध और बेचैनी तथा लड़कियों की संख्या में लड़कों के मुकाबले भारी कमी आदि।

जैसा मैंने कहा कि हरियाणा की सबसे बड़ी खासियत यह है कि जब देश प्रदेश का कोई भी व्यक्ति हरियाणा में आता है, तो हम हरियाणवी उस व्यक्ति का आंकलन उसके रंग, जाति, उपजाति, धर्म, लिंग या भाषा से नहीं करते परंतु व्यक्ति के हम गुण, क्षमता, बुद्धि, स्नेह की भावना व वातावरण में घुलने मिलने की क्षमता परखते हैं। आज सबसे बड़ी चुनौती समाज में एक सुनियोजित तरीके से बढ़ते जातीय और धार्मिक विभाजन की है, जिसे समय से पहले रोका जाना जरूरी है। प्रदेश के जन्म की स्वर्ण जयंती की शुरुआत पर सभी प्रदेशवासियों को बधाई और उनके उज्जवल व सुरक्षित भविष्य की अनेकों शुभकामनाएं।

फोटो: महासिंह पूनिया

बदल रहा पर आगे भी बढ़ रहा

पर यह सब बदलाव समय की मांग हैं। अगर हरियाणवी नार सुबह उठकर चक्की पीसने या चरखा कातने तक ही खुद को सीमित रखती तो कल्पना चावला का नासा का सफर कैसे होता आसां। यहां की मिट्टी में खेल-कूदकर बड़ी हुईं यहां की पहलवान विदेशी मिट्टी में अपने देश का नाम कैसे करतीं रोशन। यहां के छोरे सिर्फ खेतों को ही जोतते रहते तो कैसे तरक्की करता हरियाणा। दरअसल बदलाव ही जिंदगी है। पर इस बदलाव में अगर हमारी संस्कृति, परंपराओं की महक कायम रहे तो बने बात।

जाग सांझी जाग

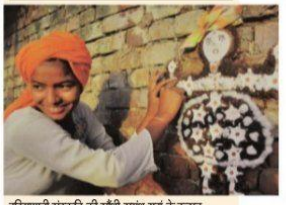

हरियाणवी संस्कृति की सौंधी सुगंध यहां के उत्सव, परंपराओं में है। पर वर्तमान में इनमें आस्था कम हो रही है। सांझी जैसे बेहद पारंपरिक रीति-रिवाज अब कम ही दिखते हैं। जाग सांझी जाग तेरे मात्थे लाग्या भाग-सांझी की पूजा करतीं कुंवारी लड़कियां ये गीत गातीं थीं। एक महीने पहले से शुरू हो जातीं थीं तैयारियां। अब ये सबकुछ अतीत का हिस्सा लगता है। साझी बनाओ मुकाबले अब भी होते हैं, पर बस खानापूर्ति बनकर। सारंगी, रागनी सुनने-सुनाने के रसिक भी आपको कम ही दिखेंगे। ज़रूरत है लुप्त हो रही लोक कलाओं को अपनाने की।

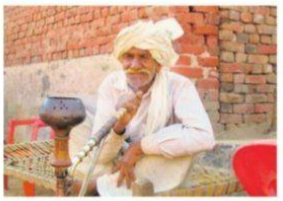

पनघट के वो जमघट

5 हजार साल से भी पुराना देसां म्हा देस हरियाणा वाकई बदल गया है। चौपालों में हुक्कों की गुड़गुड़ की जगह सुनती है अब मोबाइल की घनघन। पनघट पर अब जमघट नहीं लगते, घरों में नल जो लग गये हैं। खेत के बैल और हल की जगह है अब ट्रेक्टर। मड़कन घाली जूती की चर्र-चर्र अब हो गयी है फुर्र क्योंकि न तो वह देसी बाण रहे, न ही रहे वह देसी खाण। किसे याद है अब बाजरे की घी से तर-बतर खिचड़ी। किस्सों-बातों की जगह है बॉलीवुड और उससे भी बढ़कर हॉलीवुड। हरियाणवी बोली रोज सह-सुन रही है अंग्रेजी की गिटर-पिटर।

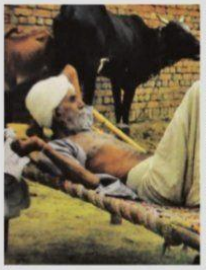

खटिया की खड़ी खाट

हरियाणवी लोकजीवन की बात हो तो खटिया का जिक्र जरूरी है। खाट्टा के ठाठ से ही तो घर की हालत बयां होती थी। खाट या चारपाई बनाने वाले कारीगरों का समाज में बाकायदा सम्मान होता था। आज खाट की भी खाट खड़ी हो गयी है, क्योंकि इसकी जगह पलंग यानी बैड ने ले ली है। रोटी टुक्क के लिए बहुत खास होता था चूल्हा, जो अब कहां। चरखे की घूं-घूं या गहनों की रुणक-झुणक अब सुनाई नहीं पड़ती। लोक-सिंगार अब लड़कियों के गले का हार नहीं रहा। घाघरे की जगह जीन्स ने ले ली है और चूण्डा तो बस ढूंढते रह जाओगे।